सांस्कृतिक स्थलचिन्ह

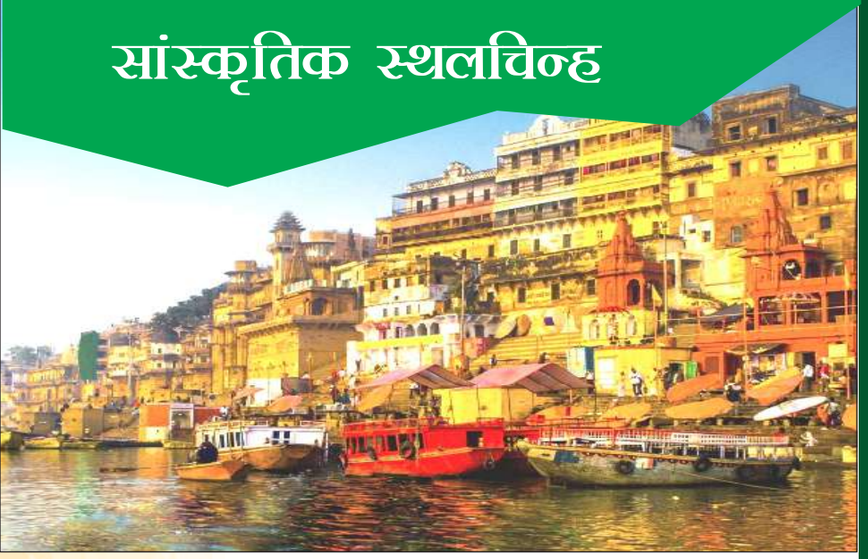

- **वाराणसी**

  इसे 'बनारस' और 'काशी' भी कहते हैं। इसे हिन्दू धर्म में शिवनगरी के साथ साथ सर्वाधिक पवित्र नगरों में से एक माना जाता है, और अविमुक्त क्षेत्र कहा जाता है। इसके अलावा बौद्ध) एवं जैन धर्म में भी इसे पवित्र माना जाता है। यह संसार के प्राचीनतम बसे शहरों में से एक है ।

- **सारनाथ**

  सारनाथ, काशी अथवा वाराणसी के १० किलोमीटर पूर्वोत्तर में स्थित प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल है। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश यहीं दिया था । यह स्थान बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थों में से एक हैद्य इसके साथ ही सारनाथ को जैन धर्म एवं हिन्दू धर्म में भी महत्वपूर्ण स्थान है। जैन ग्रन्थों में इसे 'सिंहपुर' कहा गया है और माना जाता है कि जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्म यहाँ से थोड़ी दूर पर हुआ था।

- **कुशीनगर**

  कुशीनगर एवं कसया बाजार उत्तर प्रदेश के उत्तरी-पूर्वी सीमान्त इलाके में स्थित ऐतिहासिक स्थल है। यह बौद्ध तीर्थ है जहाँ गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था। यहाँ अनेक सुन्दर बौद्ध मन्दिर हैं।

- **गोरखपुर**

  यह एक धार्मिक केन्द्र के रूप में मशहूर है जो बौद्ध, हिन्दू, मुस्लिम, जैन और सिख सन्तों की साधनास्थली रहा। यहाँ का प्रसिद्ध गोरखनाथ मन्दिर नाथ सम्प्रदाय की पीठ है। यह महान सन्त परमहंस योगानन्द का जन्म स्थान भी है ।

- **गाजीपुर**

  यह क्षेत्र पूरब अंचल के छोर पर है, यहाँ का धोबिया नृत्य अत्यंत प्रचलित व लोक लुभावन नृत्य है।

- **भदोही**

  ये पूर्वांचल कि क्राफ्ट नगरी है, जहाँ दरी के कारखाने हथकरघा केंद्र है जो विश्व विख्यात है।

Content Writer - Swarnika Pandey | Surya Saxen
Design - Amardeep Sharma
Production - IMAGE & CREATION
0522 4000344 www.imagencreation.com
imagecreation08@gmail.com

उत्तर प्रदेश सरकार

डाक्यूमेंट्री फिल्म

सांस्कृतिक क्षेत्र

पूर्वांचल

संस्कृति विभाग

उत्तर प्रदेश

पूर्वांचल की संस्कृति

पूर्वांचल भारत के सबसे प्राचीन क्षेत्रों में से एक है, जिसकी पहचान है, यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कला पूर्वांचल के मुख्यतः तीन भाग हैं- पश्चिम में पूर्वी अवधी क्षेत्र, पूर्व में पश्चिमी-भोजपुरी क्षेत्र और उत्तर भाग में तराई क्षेत्र है। भोजपुरी इस क्षेत्र क्षेत्र की प्रमुख भाषा या बोली है। हालाँकि इस क्षेत्र में हिंदी और भोजपुरी के अलावा अवधी भी बोली जाती हैं। एक तरफ यहाँ विश्व का प्राचीनतम शहर, भारतीय संगीत की राजधानी बनारस है तो दूसरी तरफ भोजपुरी लोक कला और संस्कृति का केंद्र गोरखपुर है

संगीत एवं नृत्य

यहाँ की संगम नगरी इलाहाबाद, विभिन्न कुटीर उद्योग जैसे बनारसी रेशमी साड़ी, कपड़ा उद्योग, भदोही का कालीन उद्योग हस्तशिल्प और बनारसी पान विश्वप्रसिद्ध है।

यहाँ की संस्कृति में गायन, नृत्य और संगीत अत्यंत आकर्षक है, लोक संगीत, भजन या भक्ति गीतों के अलावा मौसम के साथ विशिष्ट प्रकार के गीत यहाँ की संस्कृति का हिस्सा हैं। जैसे लोक गीतों में कजरी और बिरहा गाने काफी प्रचलित हैं, साथ ही सोहर और झूमर गाने भी बहुत लोकप्रिय हैं, जो स्थानीय भोजपुरी भाषा में गाये जाते हैं।

बनारस का कथक और तबला घराना, बांसुरी वादन यहाँ की शास्त्रीय नृत्य और संगीत शैली का हिस्सा है

कला और हस्तशिल्प

वाराणसी भारतीय कला और संस्कृति का एक पूरा संग्रहालय प्रस्तुत करता है, वाराणसी में इतिहास के बदलते समय और आंदोलनों को महसूस किया जा सकता है। यहां कला के विविध रूपो का दर्शन होता है। और अपनी सुंदर साड़ी, हस्तशिल्प, वस्त्र, खिलौने, गहने, धातु के काम, मिट्टी और लकड़ी और अन्य शिल्प के लिए नाम और प्रसिद्धि अर्जित की है।.